Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 01-01-2021; Accepted: 18-01-2021; Published: 12-02-2021
Volume 2; Issue 1; 2021; Page No. 01-03

अध्यात्मरामायण में संस्कार वर्णन

कु. राखी वशिष्ठ
Department of Language, Jiwaji University, Gwalior, Madhya Pradesh, India

सारांश
ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य चरित्र का निर्माण करना है। मनुष्य का जीवन संस्कार से ही परिशुद्ध होता है। संस्कार के द्वारा उसका भौतिक और आध्यात्मिक जीवन निखर उठता है। वर्तमान समय में संस्कारों, जीवनादर्शों एवं प्रतिमानों को गिरावट से बचाने की महती आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध–पत्र का प्रतिपाद्य है, आध्यात्म रामायण में संस्कार, इसका हमारे जीवन में क्या प्रयोजन है और हमारे जीवन में संस्कार कितने आवश्यक हैं, मनुष्य जीवन भर संस्कारों का संचय करता है। इन संस्कारों की चर्चा वेदों में विस्तार से की गई है, इनका उल्लेख स्मृतियों में भी हुआ है। प्रस्तुत शोध–पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

मूल शब्दः मानव आदिकाल, वशीभूत, सारी, प्रागैतिहासिक

प्रस्तावना

'सस्कार' शब्द संस्कृत भाषा की 'कृ' धातु से निष्पन्न होता है। 'सम्' उपसर्ग पूर्वक– 'धञ' प्रत्यय के योग से 'संस्कार' शब्द बनता है। 'कृ' धातु का अर्थ है 'करना' और 'सम्' उपसर्ग का अर्थ 'सम्यक् रूप से'। इस प्रकार व्युत्पत्ति पूर्ण संस्कार शब्द का अर्थ पूरा करना, सुधारना, मांजकर चमकाना आदि है। संस्कार संस्कृति की केन्द्रीय चेतना है। भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म में संस्कारों का विशिष्ट महत्व है। संस्कार सम्पन्न व्यक्ति ही सुसंकृत, सम्य, शिष्ट, सदाचारी और चारित्रिक दृष्टि से उत्तम माना जाता है। मानव की ऐहलौकिक और पारलौकिक सम्पन्नता का आधार संस्कार ही है–

वैदिकैः कर्ममिः पुण्यैर्निषेकादिद्विजन्मनान्।
कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रत्यः चेहं च।।[1]

स्मृतिकार महाराज मनु ने संस्कार का केन्द्रीय अर्थ मन, वचन और शरीर की पवित्रता माना है। इसके लिए उनका यह निर्देश प्रामाणिक माना गया है–

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिवेत्।
सत्यपूतां वदेद्वाचं मनः पूतं समाचरेत्।।[2]

अर्थात् देखने में पवित्र प्रतीत होने वाली भूमि पर पैर रखना चाहिए, वस्त्र से छाना हुआ जल पीना चाहिए, सत्य से पवित्र बोलना चाहिए और मन से पवित्र आचरण करना चाहिए। आचार्य मनु संस्कारों के परमाचार्य हैं। उन्होंने गर्भाधान से विवाह तक 12 संस्कारों को परिभाषित होता है। कर्णमेघ, विद्यारम्भ, वेदाम्भ और अन्त्येष्टि इन चार संस्कारों का प्रकारान्तर से स्वतंत्र वर्ण किया है। ये सभी सोलह संस्कार मानव के मन, वचन और शरीर पवित्र भाव से जुड़े हुए हैं। विभिन्न स्मृतियों में संस्कारों की संख्या अलग–अलग है, किन्तु 16 संस्कारों को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। ये सोलह संस्कार इस प्रकार हैं–

1. गर्भाधान
2. पुसंवन
3. सीमन्तोन्नयन
4. जातकर्म
5. नामकरण
6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन
8. चूड़ाकरण
9. कर्णवेध
10. उपनयन
11. केशान्त
12. सभावर्तन
13. विवाह
14. वानप्रस्थ
15. संन्यास
16. अन्त्येष्टि

भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्राख्यान के सभी ग्रन्थमानव जीवन को शिष्ट विशिष्ट और उत्कृष्ट बनाने का सोपान हैं। श्रीराम का आदर्श चरित्र ही सत्संस्कारों का पर्याय एवं आदर्श है। श्रीमदध्यात्मरामायण श्रीराम की कथा का पौराणिक आदि ग्रन्थ है, जिसमें भगवान शंकर ने अपनी परम प्रिया आदिशक्ति पराम्बा माँ पार्वती को राम कथा सुनायी है। यह पवित्र आख्यान ब्रह्माण्डपुराण के उत्तराखण्ड के अन्तर्गत माना जाता है। जिसकी रचना महामुनि परमाचार्य वेदव्यास जी ने की है। इसमें आत्म तत्व का गूढ़ रहस्य समझाया गया है तथा भगवान श्रीराम के गूढ़ अध्यात्म तत्त्व का विवेचन है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने भक्ति तत्व की विवेचना में अध्यात्म रामायण को सर्वाधिक प्रमाणिक माना है यही कारण है कि तुलसीकृत श्रीराम चरित्र मानस की कथा अध्यात्म रामायण से अधिक साम्य रखती है। अध्यात्म रामयण में संस्कारों का क्रमिक और विधिवत् विवेचन किया गया है जिसे ग्रहण कर आज के भौतिक परिवेश में किंकर्त्तव्याविमूढ़ मानव जीवन को सुखमय बना सकता है। ऐसे प्रमुख संस्कार, जिनका क्रमिक विवेचन इस प्रकार है–

गर्भाधान संस्कार

मानवीय सृष्टि का सर्वप्रथम एवं महत्वपूर्ण संस्कार गर्भाधान संस्कार माना गया है। अध्यात्म रामायण में इस संस्कार का बीज यज्ञ चरू

मानी गई है जो ऋष्यश्रृंग के द्वारा दशरथ की रानियों को प्रदान की गई थीं यह भगवान राम के गर्भ में आने की अलौकिकता का संकेत है। यज्ञ चरू ग्रहण करने के पश्चात् सभी रानियाँ गर्भवती हो गईं –

''वशिष्ठ ऋृष्य श्रृंङ्गम्या मनुज्ञातो ददौ हविः।
कौशिल्यायै सकैकेय्यै अर्धमर्ध प्रयत्नतः।।
ततः सुमित्रा संप्राप्ता जगृध्नुः पौत्रिकं चरूम्।
कौशिल्या तु स्वभागार्ध ददौ तस्यै मुदान्विता।।
कैकेयी च स्वभागार्ध ददौ प्रीतिसमन्विताः।।
उपभुज्य चरूं सर्वा स्त्रियो गर्भसमन्विताः।।
देवता इव रेजुस्ताः स्वभाषा राजमन्दिरे।[3]

तीनों माताएँ गर्भवती होकर राज–मन्दिर को अपनी कान्ति से सुशोभित करने लगीं।

जातकर्म एवं नामकरण संस्कार

महाराज दशरथ जी ने पुत्रोत्पत्ति का समाचार सुना तो वे ब्रह्मानन्दोदधि में डूब गए तथा अपने गुरु वशिष्ठ को बुलाकर जाकर्म एवं नामकरण संस्कार सम्पन्न कराया–

रामं राजीवं पत्राक्षं दृष्ट्वा हर्षाश्रुसंप्लुतः।
गुरूणा जातकर्माणि कर्त्तव्यामि चकार सः।।[4]

संस्कारों की इस विवेचना से प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में जातकर्म, नामकरण आदि संस्कारों को सम्पन्न कराने में गुरु का महत्व माता–पिता से अधिक था। ये संस्कार गुरू द्वारा ही सम्पन्न कराये जाते थे। गुरू वशिष्ठ ने चारों बालकों का नामकरण अपने पति के अनुरूप और सार्थक भाव लेकर किया–

यस्मिन् रमन्ते मुनयो विद्ययाऽज्ञान विप्लवे।
तं गुरूः प्राह रामेति रमणाद्राम इत्यापि।।
भरणाद्भरतो नाम लक्ष्मणं लक्षणान्वितम्।
शत्रुध्नं शत्रुहन्तारमेवं गुरूरभाषत।।
लक्ष्मणो रामचन्द्रेव शत्रुध्नो भरतेन च।
द्वन्द्वीभूय चरन्तौ तौ पायसांशानुसारतः।।[5]

संस्कार रीति के साथ–साथ अध्यात्म रामायण में वर्षगांठ मनाने का उल्लेख भी मिलता है, जिसमें वर्षगांठ के अवसर पर माँ कौशल्या राम को सुन्दर नवीन वस्त्र पहनाकर उन्हें स्वादिष्ट व्यंजन खिलाती थीं एवं उत्सव मानाती थीं–

कौशल्या जननी तस्य भासि मासि प्रकुर्वती।
वायनानि विचित्राणि समलंकृत्य सघवम्।।
अपूयान्मोद कान्कृत्वा कर्णशष्कुलिकास्तथा।
कर्णपूरांश्च विविधान् वर्षश्द्धौ च वायनम्।।[6]

उपनयन संस्कार

सोलह संस्कारों में उपनयन संस्कार का विशेष महत्व है। व्यास स्मृति के अनुसार ब्राह्मण बालक को 8वें वर्ष में, क्षत्रिय को 11वें वर्ष में तथा वैश्य बालक को 12वें वर्ष में यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए। उपनयन संस्कार के बिना बालक वेदाध्ययन का अधिकारी नहीं बनता तथा गुरुकुल में वेदाध्ययन की अर्हता पूर्ण नहीं करता। चारों भाई जब कौमार अवस्था को प्राप्त हुए तब गुरू वशिष्ठ जी ने उनका उपनयन संस्कार किया और वे चारों भाई सभी विधाओं में निष्णात् हो गए–

उपनीता वशिष्ठेन सर्वविद्याविशारदाः।
धनुर्वेद च निरताः सर्वशास्त्रार्थवेदिनः।।[7]

पुराण पुरूष भगवान श्रीराम और लक्ष्मण बाह्य संस्कारनिष्ठ तो हुए ही, उन्हें विश्वामित्र जी ने ऐसे सूक्ष्म रहस्मय अन्तर्संस्कार प्रदान किए जिससे वे अलौकिक शक्ति सम्पन्न हो गए–

ददौ वलां चातिवलां विद्ये द्वे देवनिर्मिते।
ययोर्ग्रहणमात्रेण क्षुत्क्षामादि न जायते।।

इन विद्याओं से युक्त होकर भगवान राम और लक्ष्मण ने क्षुधा और निर्बलता को जीत लिया। विश्वामित्र जी ताड़कावध के पश्चात् राम की अलौकिक शक्ति और उनके दिए संस्कार साफल्य पर हर्षित हुए श्रीराम का आलिंगन किया और भविष्य दृष्टा विश्वामित्र जी ने उनके सिर को सूंघकर गम्भीरता पूर्वक विचार कर रहस्यपूर्ण मंत्रों के साथ उन्हें सभी अस्त्र–शस्त्र प्रदान किए–

ततोऽतिहृष्टः परिरम्य रामं,
मूर्धन्यवघ्राय विचिन्त्य किंञ्चत्।
सर्वास्त्रजालं सरहस्यमन्त्रं,
प्रत्याभिरामाय ददौ मुनीद्रः।।[8]

विवाह संस्कार

भगवान श्रीराम के विवाहोत्सव के समय अध्यात्म रामायण में विवाह संस्कार का वर्णन विधि पूर्वक किया गया है। संस्कार की सार्थकता शुभ दिन, शुभ मुहूर्त में मानी गई है, तभी वह सार्थक एवं फलदायी होता है। धनुषभंग के पश्चात् श्री दशरथजी संवाद वाहकों से शुभ समाचार पाकर सपरिजन बारात लेकर जनकपुरी पहुँचते हैं। जनकजी सुन्दर महल में उन्हें निवास देते हैं इसके पश्चात् शुभ समय शुभ दिन जानकर भाईयों सहित राम को बुलाते हैं–

ततः शुभे दिने लग्ने सुमुहूर्ते रघून्तमम्।
आनयाभास धर्मसो रामं सभ्रातृकं तदा।।[9]

इसके पश्चात् विधि पूर्वक सम्पूर्ण वैदिक विधान सम्पन्न कर जनकजी ने अपनी पुत्री सीता श्रीराम को अर्पित की तथा अन्य तीनों पुत्रियाँ उर्मिला, माण्डवी और श्रृती, कीर्ति, क्रमशः लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को दीं। इस प्रकार चारों भाई पत्नियों सहित साक्षात् अपर लोकपालों के समान अपनी स्वयं प्रभा से सुशोभित हुए–

चत्वारों दार सम्पन्ना भ्रातरः शुभलक्षणाः।
विरेजुः प्रभया सर्वे लोकपाला इवापरे।।[10]

अग्नि संस्कार (अग्नि परीक्षा)

माँ सीता द्वारा दी गई अग्नि परीक्षा भारतीय नारी के आदर्श की कसौटी है। विश्व के लिए पतिव्रत धर्म का आदर्श है जो यह बतलाता है कि भारतीय नारी अपने संस्कारों एवं सतीत्व की परीक्षा के लिए अपना जीवन न्यौछावर करने के लिए तत्पर है –

वद्वाञ्जलिपुरा चेदमुवाचाग्नि समीपगा।
यथा मे हृदयं नित्यं नाप सर्पति राघवात्।।
तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वतः पातु पावकः।
एवमुक्त्वा तदा सीता परिक्रम्य हुताशनम्।।
विवेश ज्वलनं दीप्तं निर्भयेन हृदा सती।

दृष्ट्वा ततो भूतगणाः ससिद्धाः, सीतां महावन्हिगतां भृशार्ताः।
परस्परं प्राहुरहो स सीतां, रामः श्रियं स्वां कथमत्यजज्ञः।।[11]

अन्त्येष्टि संस्कार

भौतिक शरीर का पंचतत्व में समाहित साधन प्रक्रिया को अन्त्येष्टि संस्कार कहा जाता है। अध्यात्म रामायण इस संस्कार का वर्णन भी विविध पात्रों की मृत्यु एवं वध उपरान्त किए गए अन्तिम संस्कार के रूप में किया गया है। इस संस्कार के अन्तर्गत कुलरीत, परम्परा एवं वैदिक विधानानुसार जीवात्मा के कल्याण के लिए किए जाने वाले पर्तन, श्राद्ध, पिण्डदान, दशगाम विधान आदि आते हैं, जिन्हें अन्त्येष्टि क्रिया या और्ध्वदैहिक–संस्कार कहा जाता है। श्री भरतजी ने अपने पिता दशरथजी का विधिवत् अन्त्य कृत्य सम्पन्न किया। गुरू वशिष्ठजी के निर्देशानुसार शास्त्रोक्त विधि पिता के देह का संस्कार पूर्ण कर वेदज्ञ ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान किया–

गुरूणोक्त प्रकारेण आहिताग्नेर्यथाविधि।
संस्कृत्य स पितुर्देहं विधिदृष्टेन कर्मणा।
एकादशेऽनि प्राप्ते ब्राह्मणान्वेद पारगान्।
भाजयामास विधिवच्छतशोऽथ सहस्त्रशः।।[12]

इसी प्रकार श्रीराम द्वारा जटायु का विभीषण द्वारा रावण का अन्त्येष्टि संस्कार के वर्णन अध्यात्म रामायण में आए हैं।
इस प्रकार सभी प्रमुख संस्कारों का यथोचित विवेचन अध्यात्म रामायण में आया है।

संस्कारों की आत्मा

अन्तःकरण शुद्ध होता है। संस्कार मनुष्य को पाप और अज्ञान से दूर रखकर आचार–विचार और ज्ञान–विज्ञान से संयुक्त करते हैं। वास्तव में विधिपूर्वक संस्कार साधन से दिव्य ज्ञान उत्पन्न कर आत्मा को परमात्मा के रूप में प्रतिष्ठित करना ही मुख्य संस्कार है और मानव जीवन प्राप्त करने की सार्थकता भी इसी में है। प्रत्येक मानव का लक्ष्य है– अपना उद्धार, जिसे वह स्वयं करता है, उसे अन्य पर आश्रित होने की आवश्यकता नहीं है–

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानभवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।। (श्रीमद् भागवतगीता 6/5)

व्यक्ति अपने द्वारा अपना उद्धार करे, स्वयं को अधोगति में न डाले, क्योंकि मनुष्य आप ही तो अपना मित्र हैं और स्वयं ही अपना शुत्र हैं।

सन्दर्भ

1. मनुस्मृति 2/26
2. मनुस्मृति 6/46
3. अध्यात्म रामायण बाल, 3/10–13
4. अध्यात्म रामायण बाल, 3/37
5. अध्यात्म रामायण बाल, 3/40–42
6. अध्यात्म रामायण बाल, 3/50–51
7. अध्यात्म रामायण बाल, 3/60
8. अध्यात्म रामायण बाल, 4/33
9. अध्यात्म रामायण बाल, 6/45
10. अध्यात्म रामायण बाल, 6/57
11. अध्यात्म रामायण बाल, 6/81–84
12. अध्यात्म रामायण बाल, 7/110–111